एकलव्य का प्रकाशन

नाव चली

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

नाव चली
Nav Chali

चित्र और कहानीः वी. सुतेयेव
स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा
प्रगति प्रकाशन, मास्को के सौजन्य से प्रकाशित।

परागइनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
किफायती संस्करणः अप्रैल 2008 / 7000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो
ISBN: 81-87171-92-8
यह किफायती संस्करण अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है।

प्रकाशकः **एकलव्य,** ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in
pitara@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल (0755) 246 3769

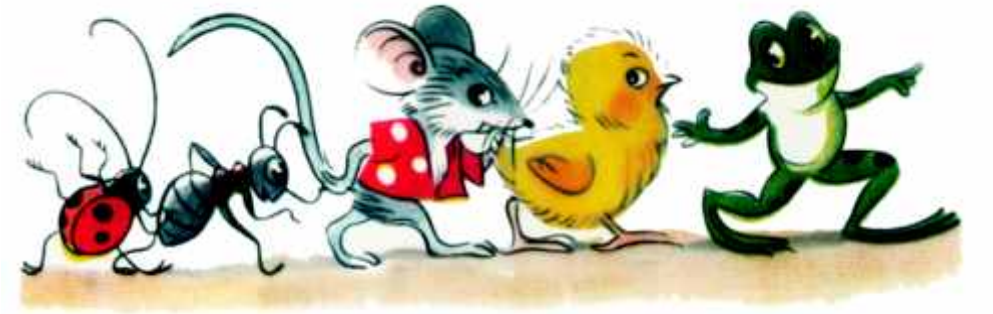

एक मेंढक, एक चूज़ा, एक चूहा, एक चींटी और एक गुबरैला, सब सैर को निकले।

चलते-चलते वे एक झील के किनारे पहुँचे।

“चलो तैरें,” कहकर मेंढक पानी में कूद गया।

“पर हमें तो तैरना नहीं आता,” चूज़ा, चूहा, चींटी और गुबरैले ने कहा।

“ट्र्र ट्र्र ट्र्र। फिर तुम्हारा तो यहाँ कोई काम नहीं।” मेंढक हँसने लगा। और वह हँसता गया। इतना हँसा कि उसकी साँस अटकने लगी।

चूज़े, चूहे, चींटी और गुबरैले को बहुत बुरा लगा। उन्होंने कोई उपाय सोचने की कोशिश की। वे सोचते गए, सोचते गए, सोचते गए। और फिर उन्होंने यह तरकीब निकाली।

चूज़ा गया और जल्दी ही एक
पत्ता लेकर वापस लौटा।

चूहा एक अखरोट का
छिलका ले आया।

चींटी एक सरकण्डा ले आई।

और गुबरैला काले धागे का एक
लम्बा टुकड़ा ले आया।

फिर वे सब काम में लग गए। उन्होंने सरकण्डे को अखरोट के छिलके के अन्दर फँसा दिया। और पत्ती को धागे से उसमें बाँध दिया। एक मिनट में ही सुन्दर नाव तैयार हो गई।

उन्होंने उसे पानी में धकाया और उस पर चढ़ गए।
और चल पड़ी उनकी नाव।

मेंढक ने अपना
सिर पानी में से
बाहर निकाला।
वह फिर से हँसने
ही वाला था,
पर नाव तो
बहुत-बहुत दूर
निकल गई थी।

इतनी दूर कि अब वह
उस तक पहुँच ही नहीं
सकता था।

ISBN: 81-87171-92-8

ग्रामीण पाठकों के लिए विशेष किफायती संस्करण